Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

कनिष्ठ (III- IV- V)

ANY ONE OUT OF TWO

जय तिरंग ध्वज

जय तिरंग ध्वज लहराओ
दुर्ग और मीनारों पर
मंदिर और घर द्वारों पर
अंबर के नीले तल पर
सागर के गहरे जल पर
सत्य पताका फहराओ
जय तिरंग ध्वज लहराओ।।
मुक्ति दिवस भारत माँ का
बीता समय निराशा का
युग-युग तक मिटने के बाद
पुनः हो रहे हैं आबाद
विजय गीत सौ-सौ गाओ
जय तिरंग ध्वज लहराओ।।
मिटी हमारी लाचारी
अब उठने की है बारी
आओ सब मिल काम करें
सारे जग में नाम करें
जन जन मन को हरषाओ
जय तिरंग ध्वज लहराओ।।

- 'रमेश कौशिक'

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

कनिष्ठ (III- IV- V)

ANY ONE OUT OF TWO

झंडा ऊँचा रहे हमारा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा बरसाने वाला
वीरों को हरषाने वाला
मातृभूमि का तन-मन सारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

स्वतंत्रता के भीषण रण में,
रखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण में,
काँपे शत्रु देखकर मन में,
मिट जावे भय संकट सारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

इस झंडे के नीचे निर्भय,
हो स्वराज जनता का निश्चय,
बोलो भारत माता की जय,
स्वतंत्रता ही ध्येय हमारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

आओ प्यारे वीरों आओ,
देश-जाति पर बलि-बलि जाओ,
एक साथ सब मिलकर गाओ,
प्यारा भारत देश हमारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

इसकी शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे,
विश्व-विजय करके दिखलावे,
तब होवे प्रण-पूर्ण हमारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

- 'श्यामलाल गुप्त पार्षद'

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

मध्यम (VI- VII- VIII)

ANY ONE OUT OF TWO

वीरों को कैसा हो वसंत ?

वीरों को कैसा हो वसंत ?
आ रही हिमाचल से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

फूली सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,
वधु-वसुधा पुलकित अंग-अंग,
हैं वीर देश में किंतु कंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

भर रही कोकिला इधर तान,
मारू बाजे पर उधर गान,
है रंग और रण का विधान,
मिलने आये हैं आदि-अंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

गलबाँहें हो, या हो कृपाण
चल-चितवन हो, या धनुष-बाण,
हो रस-विलास या दलित-त्राण
अब यही समस्या है दुरंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-शीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

कह दे अतीत अब मौन त्याग,
लंके, तुझ में क्यों लगी आग?
ऐ कुरूक्षेत्र! अब जाग, जाग,
बतला अपने अनुभव अनंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

हल्दी-घाटी के शिला-खंड,
ऐ दुर्ग ! सिंह-गढ़ के प्रचण्ड,
राणा ताना का कर घमण्ड,
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वसंत ?

भूषण अथवा कवि चंद नहीं,
बिजली भर दे वह छंद नहीं ,
है कलम बँधी, स्वच्छन्द नही
फिर हमें बतावे कौन? हंत !
वीरों का कैसा हो वसंत ?

- सुभद्रा कुमारी चौहान

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

मध्यम (VI- VII- VIII)

ANY ONE OUT OF TWO

खूनी हस्ताक्षर

(1)वह खून कहो किस मतलब का
जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का
आ सके देश के काम नहीं।

(2)वह खून कहो किस मतलब का
जिसमें जीवन, न रवानी है!
जो परवश होकर बहता है,
वह खून नहीं, पानी है!

(3)उस दिन लोगों ने सही-सही
खून की कीमत पहचानी थी।
जिस दिन सुभाष ने बर्मा में
माँगी उनसे कुरबानी थी।

(4)बोले, "स्वतंत्रता की खातिर
बलिदान तुम्हें करना होगा।
तुम बहुत जी चुके जग में,
लेकिन आगे मरना होगा।

(5)आज़ादी के चरणों में जो,
जयमाल चढ़ाई जाएगी।
वह सुनो, तुम्हारे शीशों के
फूलों से गूँथी जाएगी।

(6)आजादी का संग्राम कहीं
पैसे पर खेला जाता है?
यह शीश कटाने का सौदा
नंगे सर झेला जाता है"

(7)यूँ कहते-कहते वक्ता की
आँखों में खून उतर आया!
मुख रक्त-वर्ण हो दमक उठा
दमकी उनकी रक्तिम काया!

(8)आजानु-बाहु ऊँची करके,
वे बोले, "रक्त मुझे देना।
इसके बदले भारत की
आज़ादी तुम मुझसे लेना।"

(9)हो गई सभा में उथल-पुथल,
सीने में दिल न समाते थे।
स्वर इनकलाब के नारों के
कोसों तक छाए जाते थे।

(10)"हम देंगे-देंगे खून"
शब्द बस यही सुनाई देते थे।
रण में जाने को युवक खड़े
तैयार दिखाई देते थे।

(11)बोले सुभाष, "इस तरह नहीं,
बातों से मतलब सरता है।
लो, यह कागज़, है कौन यहाँ
आकर हस्ताक्षर करता है?

(12)इसको भरनेवाले जन को
सर्वस्व-समर्पण करना है।
अपना तन-मन-धन-जन-जीवन
माता को अर्पण करना है।

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

(13)पर यह साधारण पत्र नहीं,
आज़ादी का परवाना है।
इस पर तुमको अपने तन का
कुछ उज्ज्वल रक्त गिराना है!

(14)वह आगे आए जिसके तन में
खून भारतीय बहता हो।
वह आगे आए जो अपने को
हिंदुस्तानी कहता हो!

(15)वह आगे आए, जो इस पर
खूनी हस्ताक्षर करता हो!
मैं कफ़न बढ़ाता हूँ, आए
जो इसको हँसकर लेता हो!"

(16)सारी जनता हुंकार उठी-
हम आते हैं, हम आते हैं!
माता के चरणों में यह लो,
हम अपना रक्त चढ़ाते हैं!

(17)साहस से बढ़े युवक उस दिन,
देखा, बढ़ते ही आते थे!
चाकू-छुरी कटारियों से,
वे अपना रक्त गिराते थे!

(18)फिर उस रक्त की स्याही में,
वे अपनी कलम डुबाते थे!
आज़ादी के परवाने पर
हस्ताक्षर करते जाते थे!

(19)उस दिन तारों ने देखा था
हिंदुस्तानी विश्वास नया।
जब लिखा महा रणवीरों ने
ख़ूँ से अपना इतिहास नया।

- 'गोपालप्रसाद व्यास'

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

वरिष्ठ (IX- X- XI-XII)

ANY ONE OUT OF TWO

नि:शस्त्र सेनानी

'सुजन, ये कौन खड़े हैं?' बंधु ! नाम ही है इनका बेनाम,
'कौनसा करते हैं ये काम? काम ही है बस इनका काम ।

'बहन-भाई', हाँ कल ही सुना, अहिंसा, आत्मिक बल का नाम,
'पिता!' सुनते हैं श्री विशवेश, 'जननि?' श्री प्रकृति सुकृति सुखधाम ।

हिलोरें लेता भीषण सिंधु पोत पर नाविक है तैयार
घूमती जाती है पतवार, काटती जाती पारावार ।

'पुत्र-पुत्री हैं?' जीवित जोश, और सब कुछ सहने की शक्ति;
'सिद्धि'-पद-पद्मों में स्वातन्त्र्य-सुधा-धारा बहने की शक्ति ।

'हानि?' यह गिनो हानि या लाभ, नहीं भाती कहने की शक्ति,
'प्राप्ति?' – जगतीतल का अमरत्व, खड़े जीवित रहने की शक्ति।

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

विश्व चक्कर खाता है और सूर्य करने जाता विश्राम,
मचाता भावों का भू-कम्प, उठाता बाँहें, करता काम ।

'देह ?' – प्रिय यहाँ कहाँ परवाह टँगे शूली पर चर्मक्षेत्र,
'गेह?' –छोटा-सा हो तो कहूँ विश्व का प्यारा धर्मक्षेत्र !

'शोक?' – वह दुखियों की आवाज कँपा देती है मर्मक्षेत्र,
'हर्ष भी पाते हैं ये कभी?' – तभी जब पाते कर्मक्षेत्र।

फिसलते काल-करों से शस्त्र, कराली कर लेती मुँह बंद;
पधारे ये प्यार पद-पदम, सलोनी वायु हुई स्वच्छंद !

'क्लेश?' – वह निष्कर्मों का साथ कभी पहुँचा देता है क्लेश;
लेश भी कभी न की परवाह जानते इसे स्वयम् सर्वेश ।

'देश?' - यह प्रियतम भारत देश, सदा पशु-बल से जो बेहाल,
'वेश ?' - यदि वृन्दावन में रहे कहा जावे प्यारा गोपाल !

द्रौपदी भारत माँ का चीर, बढ़ाने दौड़े यह महाराज,
मान लें, तो पहनाने लगूँ, मोर-पंखों का प्यारा ताज!

उधर वे दु:शासन के बंधु, युद्ध-भिक्षा की झोली हाथ;
इधर ये धर्म-बंधु, नय-सिंधु, शस्त्र लो, कहते हैं – 'दो साथ'।

लपकती हैं लाखों तलवार, मचा डालेंगी हाहाकार,
मारने-मरने की मनुहार, खड़े हैं बलि-पशु सब तैयार।

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

किंतु क्या कहता है आकाश ? हृदय ! हुलसो सुन यह गुंजार,
'पलट जाये चाहे संसार, न लूँगा इन हाथों हथियार'।

'जाति?' – वह मजदूरों की जाति, 'मार्ग?' यह काँटों वाला सत्य;
रंग ?' –श्रम करते जो रह जाय,देख लो दुनिया भर के भृत्य ।

'कला' ? – दुखियों की सुनकर तान, नृत्य का रंग-स्थल हो धूल;
'टेक'?- अन्यायों का प्रतिकार, चढ़ाकर अपना जीवन-फूल।

'क्रांतिकर होंगे इनके भाव?' विश्व में इसे जानता कौन?
'कौनसी कठिनाई है?'- यही, बोलते हैं ये भाषा मौन !

'प्यार?' – उन हथकड़ियों से और कृष्ण के जन्म-स्थल से प्यार !
'हार?' – कंधों पर चुभती हुई अनोखी जंजीरें हैं हार !

'भार?' – कुछ नहीं रहा अब शेष, अखिल जगतीतल का उद्धार !
'द्वार?' – उस बड़े भवन का द्वार, विश्व की परम मुक्ति का द्वार !

पूज्यतम कर्म-भूमि स्वच्छन्द, मची है डट पड़ने की धूम;
दहलता नभ मण्डल ब्रह्मांड, मुक्ति के फट पड़ने की धूम !

-'माखन लाल चतुर्वेदी'

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-शीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

वरिष्ठ (IX- X- XI-XII)

ANY ONE OUT OF TWO

किसको नमन करूँ मैं भारत?

तुझको या तेरे नदीश, गिरि, वन को नमन करूँ, मैं ?
मेरे प्यारे देश ! देह या मन को नमन करूँ मैं ?
किसको नमन करूँ मैं भारत ? किसको नमन करूँ मैं ?

भू के मानचित्र पर अंकित त्रिभुज, यही क्या तू है ?
नर के नभश्चरण की दृढ़ कल्पना नहीं क्या तू है ?
भेदों का ज्ञाता, निगूढ़ताओं का चिर ज्ञानी है;
मेरे प्यारे देश ! नहीं तू पत्थर है, पानी है।

जड़ताओं में छिपे किसी चेतन को नमन करूँ मैं ?
किसको नमन करूँ मैं भारत ? किसको नमन करूँ मैं ?

तू वह, नर ने जिसे बहुत ऊँचा चढ़कर पाया था;

तू वह, जो संदेश भूमि को अम्बर से आया था।

तू वह, जिसका ध्यान आज भी मन सुरभित करता है ;

थकी हुई आत्मा में उड़ने की उमंग भरता है।

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-शेष LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

गंध-निकेतन इस अदृश्य उपवन को नमन करूँ मैं?

किसको नमन करूँ मैं भारत ? किसको नमन करूँ मैं ?

वहाँ नहीं तू जहाँ जनों से ही मनुजों को भय है;

सब को सब से त्रास सदा सब पर सब का संशय है।

जहाँ स्नेह के सहज स्रोत से हटे हुए जनगण हैं,

झंड़ों या नारों के नीचे बँटे हुए जनगण हैं।

कैसे इस कुत्सित, विभक्त जीवन को नमन करूँ मैं?

किसको नमन करूँ मैं भारत ? किसको नमन करूँ मैं ?

तू तो है वह लोक, जहाँ उन्मुक्त मनुज का मन है;

समरसता को लिये प्रवाहित शीत-स्निग्ध जीवन है।

जहाँ पहुँच मानते नहीं नर-नारी दिग्बंधन को;

आत्म-रूप देखते प्रेम में भरकर निखिल भुवन को ।

कहीं खोज इस रूचिर स्वप्न पावन को नमन करूँ मैं?

किसको नमन करूँ मैं भारत ? किसको नमन करूँ मैं ?

भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है,
एक देश का नहीं, शील यह भूमंडल भर का है।
जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है;
देश-देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित भास्वर है।

Laxman Public School

Hauz Khas Enclave, New Delhi 110016
Ph: 26963240, 26865095 Fax: 26524432
Email: general@laxmanpublicschool.com
Website: www.laxmanpublicschool.com

स्मृति-दीप LAXMAN MEMORIAL INTERSCHOOL COMPETITION

11th November 2016

निखिल विश्व को जन्मभूमि-वंदन को नमन करूँ मैं !

किसको नमन करूँ मैं भारत ? किसको नमन करूँ मैं ?

खंडित है यह मही शैल से, सरिता से सागर से;
पर, जब भी दो हाथ निकल मिलते आ द्वीपांतर से;
तब खाई को पाट शून्य में महा मोद मचता है;
दो द्वीपों के बीच सेतु यह भारत ही रचता है।

मंगलमय यह महासेतु-बंधन को नमन करूँ मैं।

किसको नमन करूँ मैं भारत ? किसको नमन करूँ मैं ?

दो हृदयों के तार जहाँ भी जो जन जोड़ रहे हैं,
मित्र-भाव की ओर विश्व की गति को मोड़ रहे हैं।
घोल रहे हैं जो जीवन-सरिता में प्रेम-रसायन,
खोल रहे हैं देश-देश के बीच मुँदे वातायन।

आत्मबंधु कहकर ऐसे जन-जन को नमन करूँ मैं।

किसको नमन करूँ मैं भारत ! किसको नमन करूँ मैं ?

उठे जहाँ भी घोष शांति का, भारत, स्वर तेरा है,
धर्म-दीप हो जिसके भी कर में, वह नर तेरा है।
तेरा है वह वीर, सत्य पर जो अड़ने आता है,
किसी न्याय के लिए प्राण अर्पित करने जाता है।

मानवता के इस ललाट-चंदन को नमन करूँ मैं।

किसको नमन करूँ मैं भारत ? किसको नमन करूँ मैं ? - 'रामधारी सिंह दिनकर'